22

सभा एवं मंच संचालन और उद्घोषणा

किसी सभा या समारोह के मंच पर जो व्यक्ति संचालक की भूमिका में उपस्थित होता है उसकी वाणी की विशिष्टता सभा में बैठे लोगों को सामान्यत: आकर्षित व प्रभावित करती है। मंच संचालन के लिए भाषा का कौशल विशेष महत्व रखता है। इस भाषायी कुशलता को अभ्यास द्वारा भी सीखा जा सकता है। इसके साथ ही रेडियो, टेलीविजन या विविध कार्यक्रमों में की जाने वाली घोषणाओं के लिए भी भाषा की कुशलता आवश्यक होती है।

यह भी उल्लेखनीय है कि आज के व्यावसायिक युग में अपनी बात प्रभावशाली और विश्वसनीय ढंग से अभिव्यक्त करने के लिए भी भाषा की कुशलता अनिवार्य है। आप अपने जीवन में भाषा का प्रयोग आवश्यकता के अनुसार विविध रूपों में करते ही हैं। लेकिन मंच संचालन और उद्घोषणा के लिए भाषा की जिस शैली का प्रयोग किया जाता है वह सामान्य बोलचाल की भाषा से भिन्न और विशिष्ट होती है। आप किसी-न-किसी सभा-समारोह में गए होंगे अथवा रेडियो, टी.वी. पर उद्घोषणाएँ सुनी होंगी। आपने ध्यान दिया होगा कि जिस भाषा का प्रयोग उद्घोषक या मंच-संचालक करता है, उसकी शैली कितनी प्रभावशाली व रोचक होती है। ऐसी भाषा का प्रयोग आप भी आवश्यकता के अनुसार कर सकते हैं। और ऐसी भाषा के माध्यम से आप अपनी बात अनुकूल ढंग से अभिव्यक्त करते हैं।

इस पाठ में हम भाषा की इसी कुशलता के बारे में पढ़ेंगे और यह समझने की कोशिश करेंगे कि किसी मंच का संचालन और उद्घोषणा करते वक्त किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :-

- भाषा के प्रभावशाली प्रयोग के विविध रूपों और उनकी महत्ता को स्पष्ट कर सकेंगे;

- संदर्भ अथवा विषय के अनुसार शब्दों, वाक्यों और विषयवस्तु का चयन एवं प्रयोग कर सकेंगे;
- विभिन्न अवसरों पर प्रभावी रूप से मंच-संचालन एवं उद्घोषणाएँ कर सकेंगे;
- सभाओं में मंच-संचालन, और उद्घोषणाओं के दौरान उचित अनुतान, बलाघात का प्रयोग करते हुए भावपूर्ण मौखिक अभिव्यक्ति कर सकेंगे।

22.1 मंच-संचालन

हम शब्दों और वाक्यों का चयन और प्रयोग अवसर एवं संदर्भ के अनुसार करते हैं। उदाहरण के लिए, हम किसी विशिष्ट व्यक्ति के साथ बात करते समय इस बात का ध्यान रखते हैं कि हमारी भाषा में आदरसूचक शब्दों का प्रयोग हो और विनम्रतापूर्वक हमारी बात दूसरों तक समुचित ढंग से पहुँच जाए। आपने यह भी देखा होगा कि हम एक ही बात को विविध रूपों में अभिव्यक्त करते हैं। अभिव्यक्ति की यह विविधता संदर्भ और प्रसंग पर निर्भर होती है - औपचारिक और अनौपचारिक स्थितियों में भाषा अपना रूप बदल लेती है। भाषा में यह बदलाव जरूरी भी है ताकि प्रभावी रूप से अभिव्यक्ति हो सके। जैसे- जब हम अपने पिता या दोस्त से पूछते हैं कि क्या वे क्रिकेट का मैच देखने स्टेडियम जाएँगे, तो हम कुछ इस तरह से कहते हैं:-

- क्या आप क्रिकेट मैच देखने चलेंगे? अगर आप भी क्रिकेट मैच देखने चलेंगे तो मैं आपके लिए भी टिकट खरीद लेता हूँ।
- क्या कहते हो, आज क्रिकेट मैच देखने चलें? क्यों, न आज मैच देखने चला जाए?

अब बताइए कि कौन-सी बात किससे कही गई होगी? पहली बात पिताजी से कही गई है और दूसरी बात दोस्त से। आपका उत्तर भी संभवत: यही होगा। भाषा में शब्दों के चयन और वाक्य की बनावट से ही आपने यह जान लिया होगा। इसका मतलब यह है कि विविध संदर्भों में अलग-अलग तरह से हम भाषा का प्रयोग करते हैं। इस पाठ में भाषा-प्रयोग के विविध संदर्भों की चर्चा की गई है। इनमें प्रमुख हैं–

- अवसर
- स्थिति
- व्यक्ति
- उद्देश्य
- समय

इनके अतिरिक्त भी ऐसे अनेक बिंदु होते हैं जिनके अनुसार हम अपनी बात कहने के ढंग को बदल देते हैं।

पाठगत प्रश्न 22.1

1. भाषा-प्रयोग के संदर्भ में कौन-सा बिंदु शामिल नहीं है–

   (क) स्थिति (ख) परिवार

   (ग) उद्देश्य (घ) समय

2. विशिष्ट लोगों से वार्तालाप के संदर्भ में उपयुक्त नहीं है–

   (क) भाषा आदरसूचक (ख) विनम्रता

   (ग) सही अर्थ पहुँचना (घ) अति विस्तार

22.2 मंच-संचालन के भिन्न रूप और विशेषताएँ

यहाँ कवि सम्मेलन के मंच संचालन की दो स्थितियों का उल्लेख किया जा रहा है, उन्हें ध्यान से पढ़िए -

स्थिति-1 :
कवि सम्मेलनः सभागार की स्थिति

एक बड़ा सभागार, सैकड़ों दर्शकों और श्रोताओं से खचाखच भरा हुआ। दर्शकों की बहुत अधिक संख्या। श्रोताओं को देखकर रवि का दिल डूबने लगा। वह सोचने लगा कि कैसे कवि सम्मेलन के मंच-संचालन का कार्य संभाल पाएगा? आज उसे अपने जीवन की यह सबसे बड़ी परीक्षा लग रही थी। और हो भी न क्यों नहीं, यह पहला मौका था जब उसे मंच-संचालन का कार्य सौंपा गया था। जैसे-तैसे जब वह मंच पर पहुँचा तो दर्शकों ने तालियों की गड़गड़ाहट से उसका स्वागत किया। रवि का हौसला बढ़ने लगा। रवि ने बोलना शुरू किया, लेकिन दर्शकों की आपसी बातचीत का शोर कम नहीं हो रहा था। इस शोर में ही रवि ने बोलना शुरू कर दिया–

रवि अपनी बात कहता रहा- जो वह रट कर आया था।

''मित्रो!, आज हम गणतंत्र दिवस के अवसर पर यहाँ कवि सम्मेलन के लिए एकत्र हुए हैं। यह इक्हत्तरवाँ गणतंत्र दिवस है और हम सभी को इस पर्व को अत्यंत उत्साह और उमंग के साथ मनाना चाहिए। आप सभी का स्वागत है। मैं सभी कवियों को मंच पर आमंत्रित करता हूँ। .....!''

सभागार में अब भी बहुत शोर था लेकिन रवि ने अपनी बात जारी रखी।

स्थिति-2 :
रोहित का मंच-संचालन

रोहित ने दर्शकों की मन:स्थिति और वहाँ की परिस्थिति को समझते हुए तुरंत मंच-संचालन

से जुड़ी अपनी प्रतिभा का उपयोग किया। उसने वह सब नहीं कहा जो वह संचालन की शुरुआत के लिए तैयार करके आया था। वह मंच पर गया और माइक हाथ में लेकर खड़ा हो गया। वह कुछ सेकेंड तक चुप रहा। उसको चुप देखकर दर्शकों को यह अहसास हो गया कि कहीं कुछ गड़बड़ है। धीरे-धीरे शोर धीमा होने लगा। और जैसे ही सभागार में कुछ शांति हुई, रोहित ने बोलना शुरू किया- ''आपकी तालियों की गड़गड़ाहट में आपके उत्साह और हर्ष की गूँज को मैं सुन सकता हूँ। आपके मन से निकली आवाज मेरे मन तक स्वत: ही पहुँच गई है। ऐसा क्यों न हो? मन का रिश्ता होता ही ऐसा है।'' सभागार पूरी तरह से शांत हो चुका था। रोहित की बात सभी ध्यान से सुनने लगे। रोहित ने आत्मविश्वास के साथ अपनी बात जारी रखी -''.....और इसी मन का एक सिरा आपके-हमारे अपने देश के साथ भी जुड़ा हुआ है। इस इक्हत्तरवें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में आपकी उपस्थिति ही आपके भावों की स्वत: अभिव्यक्ति है। तो स्वागत है, आप सभी का इस कार्यक्रम में।.....!'' फिर से तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा सभागार गूँज उठा। इस बार रोहित बिल्कुल भी चिंतित नहीं था!

आपने मंच संचालन की दो स्थितियों के बारे में पढ़ा।

आपको किसका मंच-संचालन पसंद आया और क्यों? आपको अपनी पसंद के जो भी कारण समझ में आए वही मंच-संचालन की खूबियाँ हैं, और यही मंच-संचालन का सबसे मजबूत पक्ष है। रवि और रोहित के मंच-संचालन में आपको मुख्य अंतर क्या नजर आता है? अगर रवि या रोहित के स्थान पर आपको मंच-संचालन का दायित्व दिया जाता तो आपकी स्थिति कैसी होती और मंच-संचालन के दायित्व को ठीक से निभाने के लिए आप क्या करते? वास्तव में ये ऐसे सवाल हैं जो आपको अपने भाषा-व्यवहार अथवा भाषा-प्रयोग की कुशलता के प्रति सजग करते हैं और भाषायी दक्षता लाते हैं।

वस्तुत: रोहित के मंच-संचालन की निम्नलिखित विशेषताएँ उभरकर सामने आईं:-

(i) दर्शकों की मन:स्थिति को समझना।

(ii) दर्शकों को अपनी ओर आकृष्ट करना।

(iii) दर्शकों की प्रतिक्रिया के अनुसार मंच-संचालन के संबंध में तुरंत उचित निर्णय लेना।

(iv) संदर्भ (दर्शक, स्थिति या माहौल) के अनुसार अपनी पूर्व तैयारी/योजना में परिवर्तन करते हुए अपने कथ्य और अभिव्यक्ति (भाषा-प्रयोग) में समुचित परिवर्तन करना।

(v) भावपूर्ण मौखिक अभिव्यक्ति के लिए उचित अनुतान, बलाघात का प्रयोग करना।

(vi) दर्शकों की पृष्ठभूमि, भाषा-स्तर आदि को उनकी संपूर्णता में समझने की कोशिश करना।

(vii) दर्शकों के साथ दृष्टि-संपर्क बनाए रखना।

एक प्रभावी मंच-संचालक होना कई तरह की कुशलताओं की माँग करता है। आप कई कार्यक्रमों में शामिल हुए होंगे और मंच-संचालन को सराहा होगा।

आइए अब हम मंच-संचालन के प्रकार को समझने का प्रयास करें-

22.3 सभा या मंच संचालन

वास्तव में सभा या मंच-संचालन के अनेक प्रकार होते हैं-

1. पहला प्रकार है- सभागार में दर्शकों के सामने कार्यक्रम का आयोजन, जैसे- विद्यालय/कॉलेज का वार्षिकोत्सव, साहित्यिक गोष्ठी, सम्मेलन या सेमिनार, कार्यशाला, नाटक का मंचन, गायन/वादन/नृत्य-प्रतियोगिता/प्रस्तुति, किसी विशिष्ट व्यक्ति अथवा अतिथि का संभाषण/वक्तव्य, विदाई समारोह, शोक सभा, किसी विषय पर चर्चा आदि।

2. दूसरा प्रकार है- रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम जिसमें मुख्य रूप से वार्ता आदि का प्रावधान होता है। उदाहरण के लिए, फरमाइशी गीतों का कार्यक्रम, रेडियो पर किसी का साक्षात्कार लेना, किसी विषय पर विषय-विशेषज्ञ के साथ चर्चा करना ('सजीव' प्रसारण भी हो सकता है और रिकॉर्डिंग किया हुआ भी), कोई कहानी सुनाना या उपन्यास को धारावाहिक की तरह सुनाना, रेडियो नाटक में सूत्रधार की भूमिका निभाना, किसी विषय अथवा सूचनापरक कार्यक्रम का प्रसारण आदि। इस तरह के कार्यक्रम में श्रोता प्रत्यक्ष रूप से सामने नहीं होते इसलिए कही जाने वाली बात और कहने का तरीका बदल जाता है। बोलने की शैली और गति पर विशेष नियंत्रण होता है। इसमें बोलने की अवधि निश्चित और सीमित होती है। लंबी अवधि का प्रसारण उबाऊ हो सकता है। अगर दो व्यक्ति आपस में चर्चा कर रहे हैं तो बोलने की भूमिका को जल्दी-जल्दी बदलना अपेक्षाकृत बेहतर होता है।

3. तीसरा प्रकार है- दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम, जिसमें दो तरह के दर्शक होते हैं। पहले, जो स्टूडियो या उस जगह मौजूद होते हैं जहाँ कार्यक्रम का आयोजन और छायांकन होता है। उदाहरण के लिए, स्टूडियो अथवा किसी अन्य स्थल-साइट पर कार्यक्रम में शामिल दर्शक। दूसरे, वे दर्शक जो टी.वी. पर प्रसारित होने वाले उस कार्यक्रम को देखते हैं। ऐसी स्थिति में मंच-संचालक की दोहरी भूमिका होती है- होली के अवसर पर आयोजित होने वाले कवि सम्मेलन में इस तरह दो प्रकार के दर्शक होते हैं। मंच-संचालक को दोनों प्रकार के दर्शकों के लिए भी विषय-वस्तु और अभिव्यक्ति से जुड़ी तैयारी करनी होती है और वे बार-बार अपने संचालन में इस बात का उल्लेख करते हैं -वे दर्शक जो हमारे साथ अपने टी.वी. सेट के माध्यम से जुड़े हुए हैं, उनका भी इस कार्यक्रम में स्वागत है। हम उन दर्शकों को भी यह बताना चाहेंगे कि आप भी अपने सवाल, अपनी प्रतिक्रियाएँ टी.वी. स्क्रीन पर दिए गए पते पर भेज सकते हैं आदि। 'कौन बनेगा करोड़पति' कार्यक्रम आपको याद ही होगा। जिसमें दो तरह के दर्शक होते हैं जिनके साथ कार्यक्रम/मंच-संचालक श्री अमिताभ बच्चन निरंतर संपर्क बनाए रखते हैं। एक वे दर्शक जो 'हॉट सीट' पर उनके सामने और स्टूडियो में होते हैं और दूसरे वे, जो अपने-अपने टी.वी. सेट पर वह कार्यक्रम देख रहे होते हैं। दोनों तरह के दर्शकों को 'बाँधने' का कार्य श्री बच्चन बहुत कुशलता से करते हैं।

पाठगत प्रश्न 22.2

आपको रवि और रोहित के मंच-संचालन में कौन-से अंतर नजर आए?

(क) अभिव्यक्ति कौशल (ख) विषय

(ग) अवसर (घ) श्रोता

2. कौन सा रेडियो कार्यक्रम नहीं है?

(क) फरमाइशी गीतों का कार्यक्रम (ख) रेडियो नाटक

(ग) नृत्य प्रतियोगिता (घ) वार्ता

क्रियाकलाप 22.1

आपने रेडियो, टी.वी. या किसी अन्य समारोह का मंच-संचालन को देखा होगा। मंच संचालक करते समय कौन-कौन सी विशेषताएँ होनी चाहिए। एक सूची तैयार करें।

22.4 सभा या मंच-संचालन के समय ध्यान रखने योग्य बातें

किसी सभा अथवा मंच का संचालन करते समय अनेक चुनौतियों से गुजरना पड़ता है। सबसे बड़ी चुनौती तो यही है कि दर्शकों अथवा श्रोताओं को कैसे 'बाँधे' रखना है? यह उस व्यक्ति के लिए कठिन कार्य नहीं है जो मंच-संचालन की बारीकियों को समझता है और उचित समय पर, उचित तरीके से उसका प्रयोग करता है। ऐसी ही कुछ बारीकियों अथवा ध्यान रखी जाने वाली बातों को यहाँ शामिल किया जा रहा है -

1. **विषय की जानकारी** -सभा या मंच-संचालन के लिए जो बात सबसे जरूरी है, वह यह है कि सभा या कार्यक्रम जिस विषय पर आधारित है-उस विषय का हमें संपूर्ण ज्ञान हो। जिससे हम उस विषय के बारे में सही और प्रामाणिक जानकारी दे सकें, नवीनतम जानकारी दे सकें, विषय को रुचि और गंभीरता के साथ प्रस्तुत कर सकें और आज के संदर्भ में उसकी प्रासंगिकता निर्धारित कर सकें। आप जरा सोचिए, अगर कोई हमसे क्रिकेट की कमेंट्री करने के लिए कहे और हम क्रिकेट के बारे में जानते ही न हों तो क्या हम उसके साथ न्याय कर सकेंगे? क्या अपनी वार्ता से श्रोताओं अथवा दर्शकों को बाँध सकेंगे? क्या हम वास्तव में बता पाएँगे कि क्रिकेट के मैदान पर क्या हो रहा है? नहीं! क्रिकेट में जो शब्दावली प्रयोग में लाई जाती है, उसकी जानकारी के बिना हम केवल एक आम व्यक्ति की तरह ही बात कर सकेंगे जो रोचक और प्रभावशाली नहीं होगी। अब आप उस स्थिति के बारे में सोचिए कि आप हिंदी साहित्य के ज्ञाता हैं, हिंदी साहित्य में आपकी रुचि है और एक साहित्यिक कार्यक्रम के लिए आपको मंच-संचालन का कार्य करना है। क्या आप यह आमंत्रण स्वीकार करेंगे? बिल्कुल करेंगे, क्योंकि यह

आपकी रुचि का विषय है और आप इस विषय के जानकार हैं। किसी आकस्मिक स्थिति में भी आप कार्यक्रम को बेहतर तरीके से सँभाल सकते हैं। विषय की जानकारी होने पर आप अपनी प्रस्तुति को प्रभावी बना सकते हैं। मान लें कि विद्यालय में संगीत का कार्यक्रम होना है और सभा या मंच-संचालन का दायित्व किसी को सौंपना है तो आप किसका चयन करेंगे और क्यों? यकीनन आप ऐसे व्यक्ति का चयन करेंगे जिसकी संगीत में रुचि और जानकारी होगी, क्योंकि वह संगीत-प्रस्तुति के समय सही राग, ताल आदि का भी उल्लेख कर सके। संगीत के बारे में आत्मविश्वास के साथ एक-एक करके संगीतकारों को मंच पर आमंत्रित कर सके। गीत अथवा भजन की प्रस्तुति से पहले उसके बारे में परिचय दे सके और प्रस्तुति के बाद भी उसके बारे में प्रतिक्रियात्मक विश्लेषण कर सके।

2. **भाषा पर अधिकार** - आप यह जानते हैं कि हर विषय की अपनी शब्दावली और भाषा-संरचना होती है। हम संगीत-कार्यक्रम के मंच-संचालन के समय जैसी शब्दावली का प्रयोग करेंगे, वैसी खेल-कूद प्रतियोगिता के कार्यक्रम में नहीं कर सकेंगे। अतः यह जरूरी है कि हम विषय-विशेष की भाषा पर अधिकार रखते हों। भाषा पर अधिकार का मतलब यह है कि हम विषय के अनुसार शब्दों का उचित चयन कर सकें, हमारी वाक्य-संरचना भी विषय के अनुरूप हो और हम सभागार के माहौल, दर्शकों अथवा श्रोताओं की मनः स्थिति और परिस्थिति के अनुसार अपनी बात को कहने के तरीके को बदल सकें। इसका अर्थ यह है कि एक ही बात को कई तरह से कहा जा सकता है और अर्थ वही रहे जो हम कहना चाहते हैं। उदाहरणस्वरूप -

मूल विषय - 'आइए, अब हम सुनते हैं एक और गीत जिसके बोल हैं - कदम, कदम बढ़ाए जा, खुशी के गीत गाए जा, ये जिंदगी है कौम की तू कौम पर लुटाए जा!'

अभिव्यक्ति (बात कहने का तरीका) 1 - ''लीजिए, अब पेश है एक और गीत जो हमें इस बात की प्रेरणा देता है कि अपनी जिंदगी को कैसे जीना है! तो सुनते हैं ....!''

अभिव्यक्ति (बात कहने का तरीका) 2 - ''अगर कोई आपसे पूछे कि एक बेहतर जिंदगी के क्या मायने हैं तो आप क्या कहेंगे? शायद यही, जो देश के काम आ सके। कुछ ऐसे ही भाव लिए है हमारी अगली प्रस्तुति के लिए आ रही हैं सुरों की साधिका वनिता जी!

जोरदार तालियों से उनका स्वागत करते हैं!''

अभिव्यक्ति (बात कहने का तरीका) 3 - ''अब मैं मंच पर आमंत्रित कर रही हूँ उन्हें जिनका नाम ही उनकी पहचान है। जी हाँ, अपनी सुरीली आवाज से आप सभी को देश-भक्ति के रंगों से सराबोर कर देने वाली हैं वनिता जी!''

आपको कौन-सी अभिव्यक्ति पसंद आई और क्यों? संभवत पहली अभिव्यक्ति के मुकाबले आपको दूसरी अथवा तीसरी अभिव्यक्ति पसंद आई हो! पहली अभिव्यक्ति में

टिप्पणी

सपाट तरीके से बात कही गई है। दूसरी और तीसरी अभिव्यक्ति में बात को प्रभावी एवं आकर्षक तरीके से कहने की कोशिश की गई है।

3. **भाव-प्रवणता** -हम जिस विषय से जुड़े कार्यक्रम का सभा या मंच-संचालन कर रहे हैं उससे जुड़े भावों की पहचान भी जरूरी है। उदाहरण के लिए हम किसी भाषण प्रतियोगिता कार्यक्रम का मंच-संचालन कर रहे हैं जिसका विषय बहुत संवेदनशील है तो हमें अपनी विषय-वस्तु में और बात को कहने के अंदाज में वही संवेदनशीलता प्रकट करनी होगी तभी हम दर्शकों/श्रोताओं को अपने से जोड़ पाएँगे। विषय 'सीमा पर डटे हुए जवानों के शौर्य' का है तो हमारी आवाज़ में ओज या वीरता का भाव झलकना चाहिए। इस अवसर पर हमारी वाणी में यदि नरमी है तो वह दर्शकों को जोड़ नहीं पाएगी। लेकिन वहीं अगर विषय बच्चों के बचपन से जुड़ा है तो हमारे कहने के तरीके में बच्चों-सी कोमलता, वाणी में मधुरता होनी चाहिए। कहने का मतलब यह है कि विषय के भाव के अनुसार कहने के तरीके में बदलाव लाना जरूरी है। अब सवाल यह है कि ये भाव कैसे लाए जाएँ। हमारे बोलने में आरोह-अवरोह यानी उतार-चढ़ाव अनुतान, बलाघात, तान (पिच) से भाव अभिव्यक्त होते हैं। भाव-प्रवणता का अर्थ यही है कि कोमल भाव की कविता को मधुर भाषा में और वीर रस की कविता को पढ़ते समय वाणी में ओज, वीरता का भाव हो! अनुपयुक्त अनुतान का प्रयोग सभा या मंच-संचालन का मजा किरकिरा कर सकता है!

4. **भाव-भंगिमा** -सभा या मंच-संचालन के समय इस बात का ध्यान रखना भी जरूरी है कि हमारी भाव-भंगिमाएँ संयत हों और विषय अथवा भाव को दर्शकों/श्रोताओं तक प्रेषित करने में मदद कर सकें। दर्शकों को अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए जरूरत से अधिक और बनावटी भाव-भगिमाएँ हमारे मंच-संचालन के साथ-साथ पूरे कार्यक्रम के आनंद को खराब कर सकती हैं। एकदम सावधान मुद्रा में किया गया मंच-संचालन अपना प्रभाव खो देता है। अत: हमारी मुद्राएँ, चेहरे के हाव-भाव संयत हों। साथ ही, हम जब भी मंच पर खड़े हों तो खड़े होने का तरीका उचित हो, पैरों के बीच बहुत अधिक जगह न हो और न ही हम 'पोडियम' (एक तरह का स्टैंड जिसके पास खड़े होकर बोलते हैं।) पर न तो टेढ़े होकर खड़े हों, न ही उस पर 'झुककर' बोलें। उसे जोश में जोर-जोर से बजाना भी ठीक नहीं है। सहज रूप से की गई अभिव्यक्ति अपने आप ही भावपूर्ण होती है।

5. **स्पष्टता तथा प्रवाहपूर्णता** -विषय के अनुसार हमारे बोलने की गति और विराम में भी विविधता होगी। आमतौर पर गंभीर विषयों के सभा या मंच-संचालन के समय हमारे बोलने की गति अपने-आप ही अपेक्षाकृत थोड़ी धीमी हो जाएगी। लेकिन जब वही कार्यक्रम युवाओं के लिए है तो बोलने में गति थोड़ी तेज हो जाएगी। लेकिन ऐसा नहीं है कि हम हमेशा जल्दी-जल्दी ही बोलें या धीमे-धीमे। हमारे बोलने में स्पष्टता होनी चाहिए। हम जो कुछ कहें, उसे सभी दर्शक/श्रोता ठीक से सुन पाएँ - ऐसी कोशिश होनी चाहिए। उच्चारण की शुद्धता भी जरूरी है। अगर ऐसा नहीं होता तो कई बार अर्थ का अनर्थ हो जाता है! उदाहरण के लिए, एक सभा या मंच-संचालक यह कहना चाहते

थे - 'हमारे अगले वक्ता हैं.....!' लेकिन उच्चारण की त्रुटि ने सब पर पानी फेर दिया। उन्होंने कहा - 'हमारे अगले बक्ता हैं.....!' उच्चारण की लापरवाही से 'वक्ता' 'बक्ता' होने में देर नहीं लगी। अत: जरूरी है कि हमारा बोलना स्पष्ट हो जिसके लिए गति का सहज होना जरूरी है। बहुत जल्दी-जल्दी बोलना अस्पष्टता तो पैदा करता ही है, कई बार हकलाने की स्थिति भी आ जाती है। अत: जब भी बोलें तो उसमें अपेक्षित प्रवाह हो, स्पष्टता और उच्चारण की शुद्धता हो।

6. **अन्य जरूरी बातें** -मंच-संचालन से पहले ही माइक पर अपनी आवाज़ को जाँच लीजिए कि क्या आवाज को बढ़ाने/घटाने की जरूरत है, माइक को कितना दूर या पास रखना है आदि। दर्शकों/श्रोताओं से निवेदन कर लें कि वे अपने-अपने मोबाइल फोन को या तो साइलेंट मोड पर रख लें या बंद कर दें, जिससे कार्यक्रम में किसी तरह का व्यवधान पैदा न हो। विषय, भाव और प्रस्तुतियों के अनुसार संचालन करते समय कविता की पंक्तियों का प्रयोग अपना विशेष प्रभाव तो छोड़ता ही है, साथ ही दर्शकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करता है। इतना ही नहीं, हम कम शब्दों में अपनी पूरी बात कह सकते हैं, वह भी प्रभावी ढंग से। लेकिन इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कविता की पंक्तियाँ जरूरत के अनुरूप हों और विषय से जुड़ी हुई हों, ये पंक्तियाँ किसी प्रस्तुति के भाव से भी जुड़ी हुई हो सकती हैं। इस बात का भी ख्याल रखें कि दर्शकों को हँसाने या उनका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए कभी भी भद्दी अथवा हल्की भाषा, अपशब्दों या आपत्तिजनक मजाक न करें। बेवजह हास्य पैदा करने के लिए न ही किसी का मजाक उड़ाएँ और न ही द्विअर्थी भाषा का प्रयोग करें। सभागार में केवल एक ओर ही देखकर न बोलें बल्कि पूरे सभागार में उपस्थित दर्शकों को देखते हुए अपनी बात कहें। मंच-संचालन के लिए अच्छी तरह से तैयारी करके आएँ और इसके लिए शीशे के सामने खड़े होकर भी आप बोलने का अभ्यास कर सकते हैं। किसी भी तरह के पांडित्य-प्रदर्शन या उपदेश देने का प्रयास न करें, क्योंकि एक मंच संचालक की भूमिका कार्यक्रम को व्यवस्थित रूप से संपन्न करना होता है। वास्तव में सभा या मंच-संचालक का व्यक्तित्व, उसकी भाषा, उसके कहने का अंदाज आदि कार्यक्रम की सफलता को तय करते हैं।

पाठगत प्रश्न 22.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर दिए गए प्रश्नों का उत्तर लिखिए-

1. मंच संचालन के संबंध में अनावश्यक है-

   (क) भाषा पर अधिकार (ख) विषय की जानकारी

   (ग) उचित भाव भंगिमा (घ) द्विअर्थी भाषा का प्रयोग

2. बच्चों के कार्यक्रम के संचालन की भाषा होनी चाहिए–

(क) ओजपूर्ण (ख) गंभीर

(ग) कोमल (घ) क्लिष्ट

क्रियाकलाप 22.2

रेडियो या दूरदर्शन पर किसी कार्यक्रम के मंच-संचालन को देखिए और उसकी खूबियों और सीमाओं की एक सूची तैयार कीजिए जिनमें दस बिन्दुओं का उल्लेख हो।

22.5 उद्घोषणा

अभी आपने सभा या मंच संचालन से संबंधित विभिन्न पक्षों के बारे में पढ़ा। आइए, अब इसी से संबंधित एक अन्य विषय के बारे में पढ़ते हैं और वह विषय है- उद्घोषणा।

किसी कार्यक्रम को प्रारंभ करने के वक्त कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाती हैं, उन्हें उद्घोषणा के रूप में हम जानते हैं। साथ ही कई जरूरी सूचनाएँ देने के लिए भी इस विधा का प्रयोग करते हैं। जैसे– मेले, रेलवे स्टेशन आदि स्थलों पर उद्घोषणाएँ की जाती हैं जिसका लक्ष्य सामान्य लोगों को महत्वपूर्ण सूचना देना अथवा जागरूक करना होता है।

उद्घोषणा के लिए भी उन्हीं सभी बातों को ध्यान रखने की जरूरत है जिन बातों का ध्यान मंच-संचालन के समय रखा जाता है। उद्घोषणा की विषय-वस्तु यानी कही जाने वाली बात संक्षिप्त होती है इसलिए भाषा का और भी अधिक ध्यान रखा जाता है। बहुत ही सधे हुए अंदाज में उद्घोषणा की जाती है। उदाहरण के लिए, आपके विद्यालय में रंगोली प्रतियोगिता है और आप यह चाहते हैं कि सभी प्रतिभागी जल्दी से मैदान में आ जाएँ। तो ?

इसकी उद्घोषणा आप कैसे करेंगे?

एक उदाहरण देखिए-

''सभी प्रतिभागियों से अनुरोध है कि वे जल्दी से मैदान में अपना स्थान ग्रहण कर लें, जिससे आगे का कार्यक्रम समय से शुरू हो सके।''

उद्घोषणा में अधिक बोलने या स्पष्ट करने के लिए कोई गुंजाइश ही नहीं होती! आवाज में स्पष्टता, शुद्धता, मधुरता और विनम्रता होनी चाहिए।

पाठगत प्रश्न 22.4

1. उद्घोषणा में किस बात की गुंजाइश नहीं होती?

(क) विस्तार की (ख) संक्षिप्तता की

(ग) मधुरता की (घ) स्पष्टता की

2. एक अच्छे उद्घोषक का गुण है-

(क) संगीतात्मकता (ख) ओज

(ग) अस्पष्टता (घ) उच्चारण की शुद्धता

क्रियाकलाप 22.3

नीचे दी गई स्थितियों की उद्घोषणा करते समय आप किस प्रकार सूचना देंगे?

(क) विद्यालय के वार्षिकोत्सव में यह उद्घोषणा करना कि रास्ते से अपनी गाड़ी हटा लें।

(ख) मेले में बच्चे के खो जाने की सूचना।

(ग) ट्रेन के विलंब से आने की सूचना।

22.6 आपने क्या सीखा

- विविध संदर्भों में अलग-अलग तरह से हम भाषा का प्रयोग करते हैं।
- एक प्रभावी मंच-संचालक में अनेक गुणों की आवश्यकता होती है।
- सभा या मंच-संचालन के लिए महत्वपूर्ण बिंदु हैं– विषय की जानकारी, भाषा पर अधिकार, भाव-प्रवणता, भाव-भंगिमा, स्वष्टता एवं प्रवाहपूर्णता आदि।
- उद्घोषणा में भी मंच-संचालन की सभी विशेषताएँ शामिल होती है। इसमें संक्षिप्तता और भाषा की स्पष्टता महत्वपूर्ण गुण होते हैं।

22.7 सीखने के प्रतिफल

- प्राकृतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मुद्दों, घटनाओं के प्रति अपनी प्रतिक्रिया को बोलकर/लिखकर व्यक्त करते हैं।
- परिवेश से हिंदी के साथ-साथ अन्य भाषाओं को भी सीखते हैं एवं उनका प्रयोग करते हैं।
- विभिन्न विषयों के आपसी संबंधों की समझ बोलकर एवं विचार-विमर्श के द्वारा व्यक्त करते हैं।
- विभिन्न अवसरों पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रदर्शित करते हैं; जैसे-विचार-विमर्श, वैचारिक लेखन, वाद-विवाद प्रतियोगिता आदि।

- भाषा-कौशलों के माध्यम से जीवन-कौशलों को आत्मसात करते हैं और अभिव्यक्त करते हैं।

22.8 पाठांत प्रश्न

1. संदर्भ के अनुसार और विषय-वस्तु और भाषा को बदलना क्यों जरूरी है?
2. प्रतिष्ठित लोगों से बात करते समय किन शब्दों का प्रयोग करना चाहिए और क्यों?
3. नीचे दी गई बात को कितने तरीके से कह सकते हैं? कोई तीन तरीके लिखिए -

   'जोरदार तालियों से स्वागत कीजिए अगले वक्ता का।'
4. एक प्रभावी मंच-संचालन के लिए किन-किन बातों का ध्यान रखना जरूरी है? किन्हीं तीन बिंदुओं का उदाहरण के साथ उल्लेख कीजिए।

   मंच संचालन करते वक्त
5. विषय पर अधिकार होने के क्या-क्या लाभ होते हैं? वर्णन कीजिए।
6. मंच-संचालक की भाषा में कौन-कौन से गुण आवश्यक हैं? किन्हीं तीन का उल्लेख कीजिए।
7. मंच संचालन के कौन-कौन से रूप होते हैं? वर्णन कीजिए।

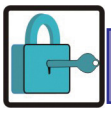

22.9 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

22.1 1. (ख) 2. (घ)

22.2 1. (क) 2. (ग)

22.3 1. (घ) 2. (ग)

22.4 1. (क) 2. (घ)